The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 9 | September 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

अमरकांत के उपन्यास 'काले-उजले दिन' में स्त्री जीवन

सोनू कुमार

शोधार्थी, हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

डॉ0 बालेन्द्र सिंह यादव

सह-आचार्य एवं शोध-निर्देशक, हिन्दी विभाग, डॉ0 अम्बेडकर राज0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ऊँचाहार-रायबरेली

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17328970

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 27-09-2025

Published: 10-10-2025

Keywords:

नारी संघर्ष, नारी मुक्ति, अस्मिता, अस्तित्व, स्वतंत्रता, सूक्ष्म दृष्टि,

ABSTRACT

आज के समय में स्त्री-पुरुष एक समान स्थिति में हर जगह सहभागिता निभा रहे हैं। आज स्त्री कहीं और किसी भी क्षेत्र में पुरुष से पीछे नहीं है। उसे हर जगह पुरुष के बराबर का दर्जा दिया जा रहा है जो कि उसका हक है। आज के समय में नारी की स्थिति में काफी परिवर्तन आ गया है, वही कुछ वर्षों पहले ऐसा नहीं था। भारतीय समाज में नारी की स्थिति हमेशा से परिवर्तनशील रही है। कहीं उसे सेविका समझकर उसकी अवहेलना की है तो कभी भारतीय समाज ने उसकी प्रशंसा की है। नारी उत्थान के लिए हमारे देश में स्त्री स्वतंत्रता और जागरण संबंधी आंदोलन की शुरुआत हुई। और इससे नारी में अपनी अस्तित्व की भावना जागृत होने लगी। वह अपनी अस्मिता को पहचानने लगी। अब वह स्वयं संघर्ष करती है और अधिकारों को प्राप्त भी करती है। अमरकांत एक यथार्थवादी तथा प्रगतिशील लेखक हैं। विद्वान उन्हें प्रेमचंद की परंपरा का लेखक मानते हैं। अमरकांत का सारा साहित्य स्वातंत्रयोत्तर साहित्य है इनकी साहित्य में स्त्री जीवन की विविध आयाम दिखाई देते है। उनके साहित्य में नारी जीवन से जुड़ी समस्याएं, संघर्ष, स्वावलंबन, स्वतंत्रता का अधिकार आदि स्त्री चेतना के कई रूप आते हैं। अमरकांत का यह उपन्यास काले उजले दिन वैसे तो पुरुष प्रधान उपन्यास है पर इसमें नारी पात्रो की अवहेलना करना असंगत जान पड़ता है, इसे नारी प्रधान

उपन्यास भी कहा जा सकता है। अमरकांत ने अपने इस उपन्यास में नारी जीवन के विविध आयामों को प्रस्तुत किया है अमर कांत ने अपनी लेखनी में बड़ी ही सूक्ष्म दृष्टि से नारी जीवन की व्यथा को केंद्रित किया है। प्रस्तुत आलेख में अमरकांत की लेखनी के इन्हीं आयामों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

मूल आलेख

अमरकांत की पूरे कथा साहित्य में कस्बाई, ग्रामीण तथा शहरी स्त्रियाँ मौजूद है। और वह स्त्रियां अपने आप को सामाजिक, तथा आर्थिक गुलामी से मुक्त करना चाहती है। वह अपने को किसी पर आश्रित रखना नहीं चाहती है। वह स्वयं कुछ करना चाहती है। कई सदियों से चलती आ रही सामाजिक रूढ़ियाँ उनके शोषण का मुख्य कारण है। जिसे वो अब तोड़ना चाहती है। 'काले-उजले दिन' उपन्यास की मुख्य नायिका कांति उपन्यास की दूसरी नारी पात्र रजनी जो कि एक आधुनिक स्त्री से अपनी तुलना करती है तो वह खुद को उससे कमतर पाती है, वह अपने पति जो कि इस उपन्यास का मुख्य पात्र है से कहती हैं कि वह भी पढ़-लिखकर एक सशक्त महिला बनना चाहती है। तथा वह पढ़ लिखकर अपने पति के काम में भी हाथ बंटाना चाहती है। वह कहती हैं कि "अब यही रजनी को लीजिए। वह पढ़ी-लिखी है, नौकरी करती है, पर उसको घमंड छू भी नहीं गया है। वह कितनी अच्छी है! मैं पढ़- लिखकर रजनी की तरह बनना चाहती हूँ। मैं अगर पढ़-लिख जाऊँगी तो आपके काम में मदद कर दूँगी।"[1]

सदियों से शोषित, पीड़ित, अपेक्षित तथा तिरस्कृत स्त्री जीवन के प्रति मानवीय दृष्टि को प्रस्तुत कर कथाकार अमरकांत ने अपनी उपयोगिता तथा प्रासंगिकता का परिचय दिया है। अमरकांत की कथा साहित्य में चित्रित मध्यवर्गीय स्त्री पात्र पुरुष पात्रों से अधिक व्यंग्य संघर्षशील तथा जागरूक है। वह अपने वर्ग की बातों उनकी सच्चाइयों को छुपाती नहीं है बल्कि समस्त अच्छाइयों और बुराइयों की परतों को खोलती हैं। अमरकांत ने मध्यवर्गीय वर्ग की स्त्रियों की समस्याओं को सकारात्मक रूप से प्रस्तुत किया है, उनका कथा साहित्य उस वर्ग के दुख दर्द को सामने रखता है। उनके कथा साहित्य के पुरुष पात्र जहाँ मध्यवर्ग की कमजोरियों का आसानी से शिकार हो जाते हैं। वहीं स्त्री पात्र मध्यवर्ग की कमजोरियों को सामने रखते हुए अपना मजबूत पक्ष रखती है। अमरकांत अपनी कथा साहित्य के माध्यम से मध्यवर्गीय समाज की स्त्रियों के विभिन्न पहलुओं को देखने का प्रयास करते है। भारतीय समाज में नारी की स्थिति, यौन-शोषण, उनकी शिक्षा-दीक्षा उनके अधिकार आदि के संबंध में उन्होंने अपने इस उपन्यास में बात की है। अपने जीवन के प्रति स्त्रियों का क्या दृष्टिकोण है? वे अपनी समस्याओं को किस तरह देखती है?

आदि सवालों को अमरकांत अपने इस उपन्यास में दिखाने का प्रयास करते हैं। अमरकांत के इस उपन्यास के साथ-साथ उसका पूरा तथा साहित्य मध्यवर्गीय जीवन को समझने की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन यथार्थ की दृष्टि से स्त्री समाज का चित्रण एवं मूल्यांकन किया है।

अमरकांत अपने कथासाहित्य के माध्यम से मध्यवर्गीय समाज की स्त्रियों की समस्याओं को रेखांकित करते हुए भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा और दिशा पर बात करते हैं। उन्होंने अपने कथासाहित्य के माध्यम से मध्यवर्गीय तथा निम्न मध्यवर्गीय स्त्रीपात्रों के प्रश्नों को उजागर करते हुए स्त्री समस्या को इसके प्रति आवाज उठाने के लिए प्रेरित भी किया है। इस संदर्भ में रुचि मिश्रा लिखती हैं "अमरकांत के उपन्यास साहित्य में नारी की सामाजिक स्थिति, उसका शोषण, आर्थिक परिस्थितियों में नारी की स्थिति, असहाय व विवश नारी, प्रगतिशील तथा सामाजिक कार्यों में योगदान देने वाली, कोठेवाली आदि नारी संबंधित दृष्टि को देखा जा सकता है। नारी जीवन की विविध पहलुओं को अमरकांत जी बहुत गहराई के साथ चित्रित करते हैं।"[2]

भारतीय समाज में जाति-पाति छुआछूत की भावना के साथ स्त्री की दशा भी सोचनी थी। स्त्रियों की दशा तथा उनके पिछड़ेपन के संदर्भ में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा "हमारी सभ्यता हमारे रीति-रिवाज, हमारे कानून सब आदमी के बनायें है, और आदमी ने अपने को ऊँची हालत में रखने का और स्त्रियों के साथ बर्तन और खिलौने जैसा बर्ताव करने और अपने फायदे और मनोरंजन के लिये उनका शोषण करने का पूरा ध्यान रखा है। इस प्रकार लगातार बोझ में दबी रहकर औरतें अपनी शक्ति पूरी तरह नहीं बढ़ा पाई, और तब आदमी उन्हें पिछड़े हुई होने का दोष देता रहा।"[3]

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन हेतु भारत सरकार ने अनेक तरह के कानून बनाए। नारी शिक्षा तथा नारी मुक्ति के प्रयास किए गए। जिसमें सरकार को कुछ हद तक सफलता प्राप्त हुई। इसका प्रमाण हमें अमरकांत के 'काले-उजले दिन' में दिखाई देता है। जहाँ कांति अपने पति से पढ़-लिखकर उसके योग्य बनने की बात कहती है।

'काले-उजले दिन' उपन्यास में कांति तथा रजनी नामक दो नायिकाओं का सृजन कर अमरकांत स्त्री जीवन को देखने का प्रयास करते हैं। उपन्यास की नायिका कांति एक ऐसी स्त्री पात्र के रूप में हमारे सामने उपस्थित होती है जो पति की खुशी के लिए बड़े से बड़ा बलिदान देने के लिए सदैव तैयार रहती है। पति की खुशी में अपनी खुशी खोजने वाली कांति अंततः उसकी खुशी के लिए खुद को मिटा देती है। वहीं दूसरी तरफ रजनी स्त्रियों के इस तरह की सोच का विरोध करती है। रजनी ऐसी स्त्रियों को बिल्कुल पसंद नहीं करती जो अपनी खुशियों का गला घोंटकर पति को खुश करने में लगी रहती हैं। रजनी एक आत्मविश्वास से

भरी हुई महिला है। वह गलत बातों का विरोध करना जानती है। अगर अमरकांत अपने इस उपन्यास में दोनों तरह के पात्र सृजित कर स्त्री के संदर्भ में समाज की सच्चाई को उजागर करने का प्रयास करते हैं।

आज स्त्रियाँ सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, व्यवसायिक तथा वैज्ञानिक हर क्षेत्र में पुरुषों के बराबर हैं। वह हर क्षेत्र में बढ़-चढ़कर अपनी सेवाएं प्रदान कर रही हैं। आत्मबोध तथा आत्मनिर्भरता ने नारी को सर्वाधिक सशक्त बनाया है। वह रूढ़िओं एवं परंपराओं को खुलकर चुनौती दे रही हैं। वह समाज की परवाह न करते हुए अपने स्वाभिमान की रक्षा कर रही है। यह नारी चेतना के कारण ही संभव हुआ है। जहाँ 'काले-उजले दिन' की रजनी कहती है "इसमें दोष हमारी सामाजिक व्यवस्था का है, जिसमे स्त्री को मनपसंद पति और पुरुष को मनपसंद पत्नी चुनने का अधिकार नहीं। त्याग एक बहुत बड़ा गुण है पर स्त्री को अपने कर्तव्यों के साथ अपने अधिकारों की भी चिंता करनी चाहिए। जो स्त्री अपने को पुरुषों की दासी मानती है वह मुझे ज़रा भी नहीं जचती।"[4]

इस उपन्यास में अमर कांत ने रजनी के रूप में एक ऐसी स्त्री पात्र को गढ़ा है जो उस सामाजिक व्यवस्था पर सवाल उठाती है जो एक स्त्री को उसके अधिकार से इसीलिए वंचित कर देता है क्योंकि वह स्त्री है। रजनी स्त्री समाज को इस बात के प्रति जागरूक करना चाहती है कि हमें अपने कर्तव्यों के साथ-साथ अधिकारों का भी ज्ञान होना चाहिए। रजनी एक पढ़ी-लिखी लड़की है इसलिए अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है। गोपाल राय ने लिखा है "उच्चतर शिक्षा ने स्त्रियों को स्वावलंबी ही नहीं बनाया बल्कि उन्हें अपनी अस्मिता और अधिकारों के प्रति जागरूक भी बनाया। उनमें परंपरागत नारी संहिता और संस्कार के प्रति विद्रोह का भाव पैदा हुआ।"[5]

अमरकांत के उपन्यासों में उपस्थित स्त्री पात्रों में जीवन की परिस्थितियों के साथ संघर्ष करने की अद्भुत क्षमता है। इनके उपन्यासों की स्त्रियाँ सम्मानपूर्ण जीवन अपनाकर अपने दुख और निराशा को मिटा देना चाहती है। वह उद्दंडता तथा आत्म प्रदर्शन के विपरीत स्पष्टवादी हैं। 'काले-उजले दिन' उपन्यास की नीलम और रजनी ये सभी स्त्रियाँ अन्याय को सहने के स्थान पर उसका विरोध करती हैं।

अमरकांत का यह उपन्यास 'काले-उजले दिन' हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण सामाजिक उपन्यास है। जिसमें भारतीय समाज की विभिन्न जटिलताओं को गहराई से उकेरा गया है। इस उपन्यास में नारी पात्र कांति केंद्रीय भूमिका निभाती है, जो तत्कालीन समाज में नारी जीवन की विडंबनाओं, संघर्षों और जिजीविषा का प्रतिनिधित्व करती है। कांति का जीवन लगातार संघर्षों से भरा हुआ है। वह एक मध्यवर्गीय परिवार की महिला है जो पारिवारिक जिम्मेदारियों और सामाजिक सीमाओं के बीच

झूलती रहती है। कांति जब शादी करके ससुराल आती है तो उसकी सास उससे बहुत कठोर व्यवहार करती है। वह उसे बहु नहीं मानती जबकि कांति उससे माँ की तरह व्यवहार की अपेक्षा रखती है "एक दिन अजीब सी घटना हुई दोपहर को कान्ती जब अपने कपड़े धोने जा रही थी तो माताजी इधर-उधर देखती हुए तेजी से आई और साबुन उठाकर चलती बनी। कांति उनका मुँह देखती रह गई इसके बाद साबुन अपने कमरे में रखकर आयीं और आँगन में चारपाई पर बैठ गयीं। कान्ति कुछ देर तक गुसलखाने में बैठी रही। फिर उठकर माता जी की पास जाकर बोली, माताजी ज़रा साबुन दे दीजिए… मेरे कपड़े गंदे हो गए हैं।

कैसा साबुन जी? साबुन क्या तुम्हारे बाप ने खरीदा है या तुम्हारे मर्द ने? जब से तुम आई हो साबुन का खर्च बढ़ गया है, यह मेरा दिल ही जानता है। यह सब कहाँ से आएगा? इसमें पैसा नहीं लगता? वह तो इसी चिंता में दिन पर दिन दुबले होते जा रहे हैं। अकेले कमाने वाले वह हैं, किसके-किसके लिए वह करें।"[6] इस तरह के ताने कांति दिन पर दिन सुनती रहती है। उसका पति निठल्ला है, वह घर पर बैठा रहता है, वह कुछ काम नहीं करता। यह सब उसके पति को भी ठीक नहीं लगता, वह काम तो करना चाहता है पर वह इतना कम पढ़ा-लिखा है कि वह कोई ढंग का काम भी नहीं कर सकता। जीवन में इतना संघर्ष होने के बावजूद भी कांति काफी आशावादी महिला हैं। वह अपने पति को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है, वह चाहती है कि उसका पति दसवीं कक्षा पास करे ताकि उसे कोई नौकरी मिल सके, जिससे की घर की दशा में सुधार हो सके। वो अपने पति से दसवीं का फार्म भरने के लिए कहती है पर उसका पति पैसे की लाचारी बता देता है और कहता है की बिना पैसे के वह परीक्षा फार्म नहीं भर पाएगा। तब उसकी पत्नी अपने गहने बेचने की बात करती है। जबकि हम जानते हैं कि हमारे समाज में स्त्रियों को अपने गहनों से काफी लगाव होता है फिर भी कांति में यह त्याग भावना काफी प्रबल है। वह कहती हैं कि "आखिर गहने होते किस दिन के लिए है? संकट-तकलीफ की लिए ही न? जब आप नहीं पढ़ेंगे तो आपको अच्छी नौकरी नहीं मिलेगी, फिर हमको जिंदगी भर दूसरे के सहारे रहना पड़ेगा। अपमान और बेइज्जती की जिंदगी बितानी पड़ेगी। पर जब आपकी नौकरी हो जाएगी तो ऐसे गहने बहुत आएँगे। और आएँ चाहे न आएँ स्वाभिमान की रोटी तो खायेंगे।"[7] इस तरह अमरकांत ने कान्ती में एक आदर्श पत्नी के सारे गुण दिखाने का प्रयास किया है।

कांति का संघर्ष और बढ़ता जाता है। वह ससुराल के सारे अत्याचार को सहते हुए खुश रहने का प्रयास करती है। कान्ति के पति के शब्दों में कहा जाए तो "क्रान्ति अब उनकी बातों की ज़रा भी परवाह नहीं करती थी। मेरे सामने आती तो मुस्कुराने लगती। दरअसल कांति की हिम्मत एवं दूरदर्शिता ने मुझे उबार लिया।[8]

कान्ति एक भावना से भरी हुई नारी पात्र हैं। वह अपने पति से बहुत प्रेम करती है। उसके लिए अपना सब कुछ त्यागने के लिए हमेशा तत्पर रहती है। जबकि वह जानती थी कि उसका पति उससे प्रेम नहीं करता, बस हमदर्दी रखता है। कथानायक भी करता है कि "कान्ति पुरनी परम्पराओं में पली लड़की थी वह खूबसूरत तो थी ही नहीं, साथ ही उसमें कोई नजाकत और लचक भी नहीं थी, जो स्त्री में होनी चाहिए। उसमें एक पुरुष की सी गंभीरता थी। वह मुझसे खेल नहीं कर सकती थी, हँसी मजाक नहीं कर सकती थी। वह मुझसे एक संगिनी का व्यवहार नहीं कर सकती थी, बल्कि वह मेरे सामने आत्मसमर्पण कर देती थी।"[9] जबकि कथानायक एक आधुनिक पत्नी की चाह रखता है। वह कहता है की "मेरा हृदय एक आधुनिक लड़की के लिए पागल रहने लगा जो पढ़ी-लिखी हो, सुंदर हो, जिसमे नाज-नखरे हो।"[10] फिर भी क्रांति अपने पति को खुश रखने की कोशिश करती। उसके पति के शब्दों में कहें तो ",मैंने देखा की प्यार, समर्पण एवं विश्वास ही कांति का जीवन था। वह मेरे प्रति या किसी और के प्रति कोई दुर्भावना रख ही नहीं सकती थी।"[11] इस तरह हम देखते है की एक तरफ कांति आदर्श पत्नी के सारे गुण समेटे हुए है। पर वह दुर्बल है वह अपने पति के अनैतिक कार्यों को जानते हुए भी वह उसका विरोध नहीं करती है।

कथाकार अमरकांत ने अपने इस उपन्यास में एक और सशक्त नारी पात्र को जगह दिया है जो कि कांति से एकदम विपरीत है। वह एक आधुनिक नारी की जो कमी कांति में रह गई थी, उसे पूरा करती है। उसका नाम रजनी है। रजनी कथानायक के साथ उसके दफ्तर में काम करती है। उसका जीवन भी कांति की तरह संघर्षपूर्ण जीवन रहा है। वह अपने माँ के साथ रहती है। उसके पिता उसकी माँ को छोड़कर दूसरी महिला से शादी करके उसके साथ रहते हैं। रजनी की माँ ने दूसरों के घरों में काम कर-कर के रजनी को पढ़ाया-लिखाया। आज रजनी की जो यह अच्छी स्थिति है, वह उसके माँ के कारण ही है।

रजनी एक आधुनिक नारी की प्रतिमूर्ति हैं। वहीं पर कांति एक परंपरावादी और रूढ़िवादी नारी है। अमरकांत ने अपने इस उपन्यास में दो विपरीत नारी पात्रो को एक जगह व्यवस्थित किया है। एक तो आदर्श पत्नी के रूप को साकार कर के अपने पूरे जीवन को पति को समर्पित कर देती हैं तो वही रजनी भावात्मकता के साथ-साथ तर्क करने की क्षमता रखती है। रजनी, कांति के जीवन से नफरत करती थीं। वह कहती हैं कि "उनमे कुछ दोष भी थे। वह अपने भाग्य से संतुष्ट थीं और उन्होंने कुछ सीखने की, आगे बढ़ने की और इस जमाने के अनुसार तरक्की करने की कोशिश नहीं की। उन्होंने अपने को कष्ट देने में ही और दूसरों को सुख देने में ही अपने जीवन की सार्थकता समझी। व्यर्थ में कष्ट उठाना और मूर्खतापूर्ण ढंग से अपनी शारीरिक तथा मानसिक शक्तियों को बर्बाद करने की मैं सार्थक नहीं। त्याग एक बहुत बड़ा गुण है, पर स्त्री को अपना स्वास्थ्य ठीक रखना चाहिए, ठीक ढंग से पहनना-ओढ़ना चाहिए, नयी-नयी बातों को सीखना चाहिए, पढ़-लिख ज्ञान हासिल करना चाहिए और कर्तव्य के साथ अपने अधिकारों की भी चिंता करनी चाहिए। जो स्त्री अपने को पुरुष की दासी मानती है, वह मुझे ज़रा भी नहीं जँचती।"[12] इस

प्रकार की बातों से हम रजनी में आधुनिक स्त्री के गुण पाते हैं। वह गलत को बर्दाश्त नहीं कर सकती। उपन्यास में उपस्थित नारी जीवन को एक पुराने रूढ़िवादी स्त्री जीवन से आधुनिक ख्यालों के नारी जीवन की यात्रा भी कहा जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. अमरकांत, कालेउजले दिन-, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023, पृष्ठ संख्या-97
2. मिश्रा, रुचि, अमरकांत के उपन्यासो में प्रतिबिंबित समाज, नवजीवन प्रकाशन, जयपुर, 2014, पृष्ठ संख्या-84
3. नेहरू, पंजवाहर लाल 0, हिंदुस्तान की समस्या, पृष्ठ संख्या-85
4. अमरकांत, कालेउजले दिन-, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023, पृष्ठ संख्या-163
5. राय, गोपाल, हिंदी उपन्यास का विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ संख्या-420
6. अमरकांत, कालेउजले दिन-, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023, पृष्ठ संख्या-33
7. वही, पृष्ठ संख्या-36
8. वही-पृष्ठ संख्या ,37
9. वही, पृष्ठ संख्या-51
10. वही, पृष्ठ संख्या-51
11. वही, पृष्ठ संख्या-56
12. वही, पृष्ठ संख्या-163